INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान EO & RO

REVENUE OFFICER (2nd Grade) & EXECUTIVE OFFICER (4th Grade)

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"RPSC Executive Officer / Revenue Officer"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"RPSC Executive Officer / Revenue Officer"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	राजस्थान का इतिहास	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल • पुरा पाषाण से ताम्रपाषाण एवं कांस्य युग तक	1
2.	ऐतिहासिक राजस्थान • महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र	10
3.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां • गुर्जर प्रतिहार वंश • मेवाड़ का इतिहास • गुहिल वंश / सिसोदिया वंश • चौहान वंश • परमार वंश • राठौड़ वंश • कछवाहा राजवंश	16
4.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	73
5.	राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार	76
6.	आधुनिक राजस्थान राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधिया • राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह • राजस्थान में प्रचलित विभिन्न सामाजिक कुरीतियाँ	88
7.	राजस्थान राजनीतिक संगठन व समाचार पत्र	98
8.	राजस्थान में राजनीतिक जागरण	100
9.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	104
10.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	113

11.	राजस्थान का एकीकरण	125
	<u>कला संस्कृति</u>	
1.	राजस्थान की वास्तु परम्परा • मंदिर • किले एवं महल • राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ	130
2.	चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प	163
3.	प्रदर्शन कला • शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य • लोक संगीत एवं वाद्य • लोक नृत्य एवं नाट्य	182
4.	भाषा एवं साहित्य	212
5.	धार्मिक जीवन • राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय • राजस्थान के लोक देवी - देवता	223
6.	राजस्थान में सामाजिक जीवन • मेले एवं त्यौहार • सामाजिक रीति रिवाज, परम्पराएँ • वेशभूषा एवं आभूषण	240
7.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	258

अध्याय – 1

राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल

❖ पुरा पाषाण से ताम्रपाषाण एवं कांस्य युग तक पाषाणकालीन सभ्यता

1. **बागौर (भीलवाड़ा)**

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए भी पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है।
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषाण उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चान्द्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्सेडनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सुई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सुअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियों व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी।
- **बागौर उत्खनन** में कुल 5 कंकाल प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शराबतने, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं। (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय** चरण में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।

- बालाथल से मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।
- यहाँ से गेहूं, जौ, चना, बाजरा और सरसों जैसी फसलों के अवशेष, पशुओं की हड्डियाँ और तांबे के औजार प्राप्त हुए हैं, जो मानव के ताम्र युग में प्रवेश और विकसित जीवनशैली को दर्शाते हैं।

<u>कांस्ययुगीन सभ्यताएं</u> -

2. <u>कालीबंगा की सभ्यता</u> -

- कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - **सरस्वती नदी**। इसे
- **दृषवती, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।
- <u>सिंधु घाटी सभ्यता</u> का एक महत्वपूर्ण स्थल है, जो राजस्थान के <u>हनुमानगढ़ जिले</u> में घग्घर नदी के किनारे स्थित है
- हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं

<u>इस सभ्यता की खोज</u> -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता <u>अमलानंद घोष</u> हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

<u>एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में</u> -

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी
2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "**सिंधीभाषा**" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - "**काले रंग की चूड़ियां**"। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86** में **कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।

<u>इस सभ्यता की विशेषताएँ</u> -

- इस सभ्यता की सड़के एक दूसरे को <u>समकोण</u> पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को "**ऑक्सफोर्ड पद्धति**" कहते हैं। इसी पद्धति को '**जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति**' के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30x15x7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था। (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली हैं वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं**।
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग ऊँट से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा** से भी परिचित थे।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं **इसलिए इसे नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

अध्याय – 5

राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार

- मराठा शक्ति के संस्थापक छत्रपति शिवाजी अपने आपको वैदिक कालीन क्षत्रियों का वंशज मानते थे, और अपने को मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश का वंशज बताते थे। अतः शिवाजी ने इस रक्त संबंध के आधार पर राजपूतों से राजनैतिक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया था। शिवाजी के काल में राजपूत और मराठों के बीच अप्रत्यक्ष संबंध स्थापित हुए थे।
- शिवाजी मुगल साम्राज्य और बीजापुर के मुस्लिम राज्य के विरुद्ध अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे, जबकि राजपूत शासक जसवंतसिंह और मिर्जा राजा जयसिंह मुगल साम्राज्य की सुरक्षा और विस्तार के लिये शिवाजी की गतिविधियों को नियंत्रित करके उसकी नवोदित शक्ति को कुचलना चाहते थे।
- मेवाड़ के महाराणा राजसिंह और शिवाजी समकालीन थे और दोनों ने मुगल सम्राट औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति का विरोध किया था। औरंगजेब ने जब हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगाया था तब केवल मेवाड़ और महाराष्ट्र ने मुगल सम्राट के पास विरोध पत्र भेजे थे। इससे स्पष्ट होता है कि मुगलों के प्रति नीति एवं लक्ष्य निर्धारित करने में महाराणा राजसिंह और शिवाजी के बीच घनिष्ठ और मधुर संबंध स्थापित हुए थे।
- औरंगजेब ने शिवाजी की शक्ति का दमन करने के लिये पहले शाइस्ता खाँ और जसवंतसिंह को भेजा था, लेकिन उन्हें अपने अभियान में सफलता नहीं मिली। जफीखाँ ने जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह द्वारा शिवाजी की शक्ति का दमन करने का दायित्व आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह को सौंपा, जिसने शिवाजी को शाही दरबार में उपस्थित होने के लिये राजी कर लिया। किन्तु जब औरंगजेब ने जयसिंह द्वारा शिवाजी को दिये गये वचन को भंग कर शिवाजी को बन्दी बना लिया, तब जयसिंह के पुत्र रामसिंह ने अप्रत्यक्ष रूप से शिवाजी की सहायता की और उसकी मुक्ति को संभव बनाया।
- 1667 ई. में जब औरंगजेब ने शाहजादे मुअज्जम और जसवंतसिंह को शिवाजी की शक्ति को कुचलने के लिए भेजा, तब शिवाजी ने जसवंतसिंह को पत्र लिखकर मुगलों से संधि करवाने में सहायता करने की प्रार्थना की थी और जसवंतसिंह की सलाह पर ही औरंगजेब ने शिवाजी को क्षमा करते हुए उसके साथ समझौता कर लिया था। इन तथ्यों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि राजपूत शासकों ने मराठों से अपने भावनात्मक संबंधों के आधार पर उनकी सहायता की, लेकिन मराठों ने केवल अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति करने के लिये राजपूत शासकों से सहयोग माँगा। आगे चलकर राजपूत-मराठा संबंधों में इसी तथ्य की प्रधानता दिखाई देती है। शिवाजी की मृत्यु के बाद उसके पुत्र शंभाजी के शासन काल में जब मारवाड़ के राठौड़ सरदार, महाराजा जसवंतसिंह के मरणोपरांत उनके पुत्र अजीतसिंह को मारवाड़ की गद्दी पर बैठाने के लिये मुगलों से संघर्ष कर रहे थे, उस समय औरंगजेब के पुत्र शाहजादे अकबर द्वारा राजपूतों के साथ मिलकर विद्रोह करने पर औरंगजेब ने उसे बंदी बनाना चाहा, तब वीर दुर्गादास राठौड़ के आग्रह पर शंभाजी ने शाहजादे अकबर को शरण देकर राजपूतों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया।
- औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय समाप्त हो गया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में उत्तराधिकार संघर्ष छिड़ गया ।
- मुख्य संघर्ष उत्तर में स्थित शाहजादा मुअज्जम और दक्षिण में तैनात शाहजादा आजम के बीच था । शंभाजी की मृत्यु के बाद मुगलों ने, शंभाजी की विधवा पत्नी येसूबाई, उसका छोटा पुत्र शाहू और परिवार के कुछ सदस्यों को बंदी बना लिया था, जो इस समय आजम की हिरासत में थे। जब आजम दक्षिण भारत से उत्तर के लिये रवाना हुआ तब अपने साथ शाहू और उसके परिवार को भी लेता गया।
- नर्मदा नदी पार करने के बाद उसने शाहू को (शाहू के परिवार को नहीं) मुक्त कर उसे महाराष्ट्र जाने दिया। आजम और उसके सेनानायकों का विचार था कि शाहू के महाराष्ट्र में प्रवेश करते ही ताराबाई (शाहू के सौतेले भाई राजाराम की पत्नी) और शाहू के मध्य संघर्ष छिड़ जायेगा जिससे मराठों को मुगल क्षेत्रों पर धावे मारने का समय ही नहीं मिल सकेगा।
- मुगलों का यह विचार सही निकला, मराठे गृह-युद्ध में उलझ गये, जिससे उन्हें मुगल-प्रान्तों और राजपूत राज्यों की ओर ध्यान देने का समय नहीं मिला। फिर भी कुछ मराठा सेनानायक नर्मदा नदी को पार कर उत्तर भारत की ओर आये तथा मंदसौर के निकट मेवाड़ के क्षेत्रों में लूटमार करने लगे। मई 1711 ई. में मराठों ने मेवाड़ में प्रवेश कर लूटमार की, जिससे महाराणा संग्रामसिंह चिन्तित हो उठे।
- महाराणा संग्रामसिंह ने आमेर के सवाई जयसिंह तथा अन्य राजपूत शासकों को पत्र लिखकर मराठों के विरुद्ध एक संयुक्त योजना बनाकर मराठा शक्ति के विस्तार को रोकने के उपाय ढूँढने की बात कही ।
- 1712 ई. में मुगल बादशाह की मृत्यु के बाद जहाँदर शाह गद्दी पर बैठा, किन्तु सैयद बंधुओं की सहायता से फर्रुखसियर ने जहाँदर शाह को गद्दीच्युत कर स्वयं ने गद्दी हथिया ली।
- फर्रुखसियर के शासन काल में मराठों को मालवा से खदेड़ने के लिये आमेर के सवाई जयसिंह को मालवा की सूबेदारी दी गयी और जोधपुर के अजीतसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया। सवाई जयसिंह ने मालवा में अपनी प्रथम सूबेदारी के काल में मेवाड़ तथा अन्य राजपूत शासकों की सहायता से मराठों को अनेक स्थानों पर पराजित किया।

- परन्तु 1715 ई. में उसे जाटों के विरुद्ध भेज दिया गया। सवाई जयसिंह की अनुपस्थिति में मराठों के आक्रमण पुनः शुरू हो गये। राजपूत सैनिक मालवा में मराठों की घुसपैठ रोकने में पूर्णतया असफल रहे।

<u>राजस्थान में मराठों के प्रवेश के समय राजपूत राज्यों की स्थिति :-</u>

- मुगल साम्राज्य के पतनोन्मुख होने के फलस्वरूप राजस्थान में भी भयंकर अराजकता व्याप्त हो गयी । अब राजस्थान की राजनीति विभिन्न नरेशों के निजी स्वार्थ प्राप्ति के उद्देश्यों से प्रेरित हो चली । प्रान्त के जातीय जीवन में सदाचार, विश्वास और सच्चाई के लिये कोई स्थान नहीं रह गया था।
- आंतरिक फूट, पारस्परिक वैमनस्य और निकृष्टतम षड्यंत्रों ने मराठों को यहाँ की राजनीति में हस्तक्षेप करने का अवसर प्रदान किया । फलस्वरूप प्रान्त में अशांति की प्रलयंकारी आग और भड़क उठी ।
- मुगल सर्वोच्चता के काल में दिल्ली की केन्द्रीय सत्ता राजस्थान के सभी राज्यों पर नियंत्रण रखती थी। किन्तु औरंगजेब की मृत्यु के बाद अब मुगल सम्राट केवल छाया मात्र रह गया और उसने अपने को हरमखाने तक सीमित कर विलासिता के रंग में डुब गया । तब राजपूत राज्यों पर अनुशासन रखने वाली शक्ति समाप्त होने लगी।
- अब ऐसी कोई सर्वोच्च शक्ति नहीं रही जो केन्द्रीय आदेशों का पालन करवा सकती थी, और महत्वाकांक्षी एवं अनधिकार चेष्टाओं के लिये होने वाले पारस्परिक युद्धों को रोक सकती थी, तथा एक ही राजवंश के राजकुमारों के पारस्परिक झगड़ों को सुलझा सकती।
- अतः अब तक जो व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ और रियासतों की आपसी प्रतिस्पर्द्धाएँ रुकी हुई थी, वे निर्बाध रूप से फूट पड़ी । इतिहासकार जदुनाथ सरकार के शब्दों में, समस्त राजस्थान एक ऐसा अजायबघर बन गया जिसके पिंजरों के फाटक और सींखचे ही हटा दिये गये हों। समस्त राजस्थान में अत्यन्त जघन्य पाशविक प्रवृत्तियाँ जागृत हो उठी। ऐसा कोई पाप नहीं था जिसे राजपूत नहीं कर सकता हो। पिता, पुत्र की हत्या कर देता था और पुत्र, पिता की। राजघराने की स्त्रियाँ अपने ही खून के संबंधियों एवं विश्वसनीय रिश्तेदारों को विष दे दिया करती थी।
- शासक अपने स्वामिभक्त मंत्रियों की जान ले लेता था । प्रत्येक राजवंश में गृह कलह आरम्भ हो गये और इन गृह कलहों में पड़ोसी रियासतें विरोधी पक्षों की सहायता के लिये युद्ध में शामिल होने लगी। इस अंधकार के युग में अनेक दुःखद घटनाएँ भी घटित हुई।
- मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णाकुमारी का विषपान उनमें से एक है, जो राजपूत इतिहास का सबसे बड़ा कलंक है। मुहम्मद शाह के अंतिम दिनों से लेकर उस दिन तक जबकि समस्त राजस्थान के राजपूत राज्यों ने ब्रिटिश सर्वोच्चता को स्वीकार किया, समस्त राजस्थान में अराजकता, लूट-खसोट, आर्थिक विनाश और नैतिक पतन का ताण्डव नृत्य अपनी समस्त विभीषिकाओं के साथ सर्वत्र दृष्टिगोचर होने लगा।
- मुगलों के आगमन काल से ही जनता की दृष्टि में, भारतीय हिन्दू नरेशों में मेवाड़ के महाराणा का सर्वप्रथम स्थान था, किन्तु अब वह एकान्त और अंधकार में चला गया।
- यद्यपि समाज और राज्यों में मेवाड़ के सिसोदिया वंश की पुरानी शान अभी भी बनी हुई थी, किन्तु 18 वीं शताब्दी के आरम्भ से राजपूतों में महत्त्व और प्रधानता प्राप्त करने के लिये कछवाहों और राठौड़ों में होड़ लगी रही। आमेर के शासक पहले तीसरे दर्जे के माने जाते थे, और राजस्थान की राजनीति में उनका कोई महत्त्व भी नहीं था, किन्तु डेढ़ सौ वर्षों तक उन्होंने जो मुगलों की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की, उससे उनको राजपूतों में प्रमुख स्थान प्राप्त हो गया।
- इस राजवंश की चार पीढ़ियों ने कूटनीति तथा रणक्षेत्र में अपनी महान योग्यता का परिचय दिया। अकबर के समय में राजा भगवानदास और मानसिंह ने, शाहजहाँ और औरंगजेब के समय में मिर्जा राजा जयसिंह ने और औरंगजेब के बाद के मुगल बादशाहों के समय में सवाई जयसिंह ने अद्भुत वीरता एवं कूटनीतिज्ञता का परिचय दिया, जिससे उसने मुगल दरबार की राजनीति में प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया।
- राजस्थान की राजनीति में मराठों का प्रथम हस्तक्षेप भी सवाई जयसिंह के कारनामों का फल था।

<u>पेशवा बाजीराव प्रथम और राजपूत राज्य</u>

बाजीराव प्रथम - बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद शाहू ने उसके बीस वर्षीय पुत्र बाजीराव को अपना पेशवा नियुक्त किया । बाजीराव एक साहसी सैनिक, रणकुशल सेनानायक तथा कूटनीति में दक्ष राजनीतिज्ञ था । छापामार युद्ध पद्धति में तो वह अत्यन्त ही निपुण था । यद्यपि बालाजी विश्वनाथ ने तात्कालिक समस्याओं का समाधान किया था, लेकिन वह उनका स्थायी समाधान नहीं कर पाया था। अनेक मराठा सरदार और कोल्हापुर का शंभाजी द्वितीय (ताराबाई का पुत्र) अभी भी शाहू के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे । मुगल दरबार का प्रमुख अमीर व दक्षिण का सूबेदार निजाम-उल-मुल्क दक्षिण में हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य की स्थापना करना चाहता था। किन्तु बाजीराव ने बड़े ही धैर्य, साहस और लगन से इन समस्याओं का सामना किया। वह साम्राज्यवादी नीति का प्रबल पोषक था और दुर्बल मुगल साम्राज्य पर प्रहार करके उत्तर-भारत के मराठों का वर्चस्व स्थापित करना चाहता था। उसने कहा था, हमें इस जर्जर वृक्ष (मुगल साम्राज्य) के तने पर आक्रमण करना चाहिये, शाखाएँ तो स्वयं ही गिर जायेंगी। यदि हम अपने संघर्ष को आगे बढ़ायें, तो मराठा ध्वज कृष्णा से अटक तक फहरायेगा। बाजीराव की उत्तर की ओर मराठा-प्रसार नीति ने राजपूतों व मराठों को आमने-सामने लाकर खड़ा कर दिया

बाजीराव प्रथम

उत्तर की ओर मराठा-प्रसार नीति से राजपूतों को विशेष रूप से चिन्ता होने लगी । राजपूतों की चिन्ता के दो कारण थे -

1) मुगल साम्राज्य की पतनोन्मुख स्थिति का लाभ उठाकर राजपूत शासक अपने-अपने राज्यों की सीमाओं का विस्तार करने की आकांक्षा रखते थे । बाजीराव की प्रसार नीति के फलस्वरूप उनकी आशाओं पर पानी फिर सकता था।

2) यह स्वाभाविक ही था कि, गुजरात व मालवा पर नियंत्रण स्थापित करने तथा दिल्ली तक जाने की इच्छा रखने वाले मराठे, मार्ग में पड़ने वाले राजस्थान के भाग को भी अपने प्रभाव में लाना चाहेंगे। इसके अलावा, गुजरात और मालवा पर मराठा नियंत्रण स्थापित हो जाने से मराठों के लिये इन प्रान्तों से सटे हुए राजपुत राज्यों पर आक्रमण करने का मार्ग प्रशस्त हो गया। अतः हम कह सकते हैं, कि शक्तिहीन एवं पतनोन्मुख मुगल साम्राज्य ने मराठों तथा राजपुत राज्यों को आमने-सामने ला खड़ा किया । सवाई जयसिंह और अभयसिंह जैसे शासकों ने कभी मुगलों के सहयोग से, कभी आपसी सहयोग से और कभी व्यक्तिगत ढंग से मराठों को रोकने का प्रयास किया।

सवाई जयसिंह की मराठा नीति

- सवाई जयसिंह की मराठा नीति – सवाई जयसिंह ने अपनी प्रथम सूबेदारी के काल में मराठों को मालवा से खदेड़ने के लिये उनके विरुद्ध सैनिक अभियान किये थे। लेकिन 1717 ई. के आस-पास उसे मालवा की सूबेदारी से हटा दिया गया और उसके स्थान पर क्रमशः मुहम्मद अमीन खाँ, निजाम-उल-मुल्क, राजा गिरधर बहादुर, भवानीराम आदि को एक के बाद एक मालवा का सूबेदार नियुक्त किया गया।
- 1729 ई. में सवाई जयसिंह को पुनः मालवा का सूबेदार नियुक्त किया गया। 1719 ई. की मुगल-मराठा संधि के अनुसार मराठों को दक्षिण के सूबों से चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल
करने का अधिकार मिल गया था।
- 1723 ई. में निजाम-उल्-मुल्क जो कि दक्षिण में अपने लिये एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना का सपना देखा करता था, ने बाजीराव को गुजरात एवं मालवा में छूट दे दी। बाद में जब निजाम को दक्षिण की सूबेदारी से हटा दिया गया तो उसने बाजीराव की सहायता से शाही अधिकारियों को परास्त करके दक्षिण में अपनी सत्ता स्थापित कर ली।
- इस अवसर पर भी उसने मराठों को मालवा एवं गुजरात से चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार दिलवाने का आश्वासन दिया। तब सम्राट ने निजाम से मालवा की सूबेदारी भी छीन ली और राजा गिरधर बहादुर को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया जो नवम्बर, 1728 ई. में मराठों से लड़ता हुआ मारा गया। उसके बाद उसके भाई भवानी राम को सूबेदार बनाया गया परन्तु वह मराठों को मालवा से निकालने में असफल रहा।
- ऐसी स्थिति में सवाई जयसिंह दूसरी बार मालवा का सूबेदार बनकर आया। उसने अनुभव किया कि जर्जरित मुगल साम्राज्य की सहायता से पेशवा बाजीराव के उत्तर की ओर प्रसार को रोकना अत्यधिक कठिन है क्योंकि 1730 ई. तक मराठों ने दक्षिण के सूबों तथा गुजरात से चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार प्राप्त कर लिया था।
- अतः सवाई जयसिंह इस समस्या को सैनिक शक्ति के द्वारा हल करने के पक्ष में नहीं था क्योंकि पिछले बारह वर्षों के इतिहास ने यह प्रमाणित कर दिया था कि इस नीति का कोई सुपरिणाम निकलने वाला नहीं है। जयसिंह ने मौजूदा स्थिति में मराठों व मुगल दरबार के बीच एक ऐसे समझौते का प्रयास किया जो मराठा आकांक्षाओं की पूर्ति करने के साथ-साथ मुगल सम्राट के सार्वभौमिक अधिकार की भी रक्षा कर सके।
- उसका विचार था कि शाहू की जागीरें तथा मराठा सरदारों को उचित मनसब देकर उन्हें पतनोन्मुख साम्राज्य का प्रमुख आधार बना लिया जाए। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये 1730 ई. के बाद जयसिंह ने लगातार प्रयत्न किये और पूना तथा सतारा से बातचीत जारी रखी। उसने शाहू तथा पेशवा बाजीराव के सामने समझौते की शर्तों का घोर विरोध किया।
- सितंबर, 1730 ई. में जयसिंह को मालवा की सूबेदारी से हटा दिया गया और उसके स्थान पर मुहम्मद बंगश को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया गया। परिणाम यह निकला कि जयसिंह ने मराठों के साथ समझौता करने के लिये अब तक जो अथक परिश्रम किया था, वह बेकार चला गया।
- पेशवा बाजीराव के सेनानायकों ने मुहम्मद बंगश को कई बार परास्त किया। परिणामस्वरूप 1732 ई. में उसे मालवा से वापस बुला लिया गया और सवाई जयसिंह को तीसरी बार मालवा का सूबेदार नियुक्त किया गया।
- सवाई जयसिंह को मालवा की सूबेदारी मिलने की सूचना पहले से ही मिल चुकी थी और वह तभी से इस समस्या के समाधान करने पर विचार करने लगा था। उसने अनुभव किया कि मालवा में शांति और व्यवस्था को बनाये रखने तथा मराठों को रोकने के लिये यदि मेवाड़ राज्य की सेवाएँ भी उपलब्ध की जा सकें तो अच्छा रहेगा।
- अतः सवाई जयसिंह के नेतृत्व में जयपुर एवं मेवाड़ राज्यों की संयुक्त व्यवस्था की योजना तैयार की गयी और सवाई जयसिंह ने अपने दीवान राजा अयामल को इस योजना के साथ उदयपुर भेजा, ताकि विस्तार से सभी बातें तय की जा सकें । अंत में दोनों के बीच समझौता सम्पन्न हो गया। इसकी मुख्य बातें इस प्रकार थीं-
- मालवा की सुरक्षा के लिये 24000 घुड़सवार और 24,000 पदाति सैनिक रखने का निश्चय किया गया। इनमें से 9,000 घुड़सवार और इतने ही पदाति सैनिक उदयपुर के होंगे तथा शेष 15,000 घुड़सवार और इतने ही पदाति सैनिक जयपुर के होंगे।

जनता को राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों से परिचित करवाकर राजनैतिक चेतना का विकास करना था।

क्रांतिकारियों का योगदान

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भिक्षा-वृत्ति की नीति (सरकार को ज्ञापन एवं याचिकाएँ मात्र देना) से असंतुष्ट होकर कुछ राष्ट्रीय नेताओं ने उग्र राष्ट्रवाद का सहारा लिया था। ब्रिटिश सरकार ने उग्रवादियों के विरुद्ध अपना दमन चक्र चलाया। फलस्वरूप देश में क्रांतिकारी एवं आतंकवादी सक्रिय हो उठे।
- राजस्थान भी क्रांतिकारी आंदोलनों से अछूता नहीं रह सका। उत्तर भारत के अनेक क्रांतिकारी, राजस्थान के क्रांतिकारियों से संपर्क बनाये हुए थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा (1857-1930 ई.) उच्च कोटि के विद्वान थे। उन्होंने 1885-97 ई. के मध्य रतलाम, उदयपुर और जूनागढ़ राज्यों में दीवान के पद पर कार्य किया था।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के संपर्क में आने के बाद वे स्वदेशी वस्तुओं व वस्त्रों के पक्के समर्थक बन गये। 1897 ई. में महाराष्ट्र के पूना नगर में प्लेग कमिश्नर रैण्ड व उसके सहायक आयर्स्ट की हत्या कर दी गयी।
- ब्रिटिश सरकार को श्यामजी कृष्ण वर्मा पर संदेह हुआ। अतः श्यामजी कृष्ण वर्मा किसी तरह जान बचाकर इंग्लैण्ड चले गये जहाँ उन्होंने इंडिया हाउस की स्थापना की। इंडिया हाउस भारतीय क्रांतिकारियों का गढ़ बन गया और वहाँ से भारत में क्रांतिकारियों को हरसंभव सहायता दी जाती रही।
- श्यामजी कृष्ण वर्मा राजस्थान के क्रांतिकारियों के प्रेरणा-स्रोत रहे। राजस्थान में क्रांतिकारियों का नेतृत्व अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, खरवा के राव गोपालसिंह आदि ने किया।

अध्याय – 9

राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन

राजस्थान में आजादी से पूर्व कई किसान एवं आदिवासी आंदोलन हुए जो उन पर किये जा रहे अत्याचारों के विरोध में हुए । राजस्थान में कई रियासतें किसानों से मनमाना कर "लाग" वसूलती थी । इनके विरोध में समय-समय पर किसान नेताओं ने राजस्थान में किसान आंदोलन किये । इसी तरह आदिवासियों के ऊपर हुए अत्याचारों के विरोध में भी कई आंदोलन हुए जिनका नेतृत्व आदिवासी नेताओं ने किया जो राजस्थान में आदिवासी आंदोलन या किसान आंदोलन के रूप में जाने गए ।

बिजौलिया किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था । बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लम्बा चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था, जोकि करीब 44 साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आंदोलन (1897-1941 44 वर्षों तक)

जिला भीलवाड़ा

बिजौलिया का प्राचीन नाम विन्ध्यावल्ली था ।

संस्थापक अशोक परमार

बिजौलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।

कारण

1. लगान की दरें अधिक थीं ।
2. लाग-बाग कई तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टैक्स) वसुल किया जा जाता था।

बिजौलिया के किसान लोगों में धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।

बिजौलिया किसान आंदोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व - साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व – विजयसिंह पथिक
3. 1923 से 1941 नेतृत्व – माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज, रामनारायण चौधरी

प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से

- 1897 में बिजौलिया के किसान गंगाराम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपुरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहां मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।

- चंवरी कर एक विवाह कर था, इसकी दर 5 रुपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया)।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया। बिजौलिया किसान आंदोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे।
- 1919 में बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आंदोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोई भी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझौता स्थाई सिद्ध नहीं हुआ।
- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता हैं और 6 वर्ष की सजा सुना दी जाती है।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होंने अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरें कम कर दी अनेक लाग-बाग हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया।
- यह किसान आंदोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता हैं।
- इस किसान आंदोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया था।
- किसान आंदोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पंछीड़ा गीत लिखा था।

बेंगू (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन

- बेंगू (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेंगू के किसानों ने अपने यहाँ लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आंदोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेन्ज खाँ हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक संधि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई, 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेंगू में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।
- सेटलमेंट कमिश्नर ट्रेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

बूँदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा। 'लाट' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन लिया जाने लगा। इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई। किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई। ये लागें दो प्रकार की थी

1. स्थाई लाग
2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए।

- बिजौलिया, बेंगू और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूँदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूँदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा। रुपये पर आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था। किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।
- मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आंदोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई। अप्रैल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूँदी राज्य के बराड़ क्षेत्र के पीड़ित किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को बरड़ किसान आंदोलन भी कहते हैं। किसानों को राजस्थान सेवा संघ का मार्गदर्शन प्राप्त था।
- किसानों ने राज्य की सरकार को अनियमित लाग, बेगार व भेंट आदि देना बंद कर दिया। आंदोलन का नेतृत्व 'राजस्थान सेवा संघ के कर्मठ कार्यकर्ता 'नयनू राम शर्मा कर रहे थे। इनके नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया।

राजस्थान का कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

अध्याय - 1

राजस्थान की वास्तु परम्परा

❖ **मंदिर**

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है। राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(1) नागर या आर्य शैली-

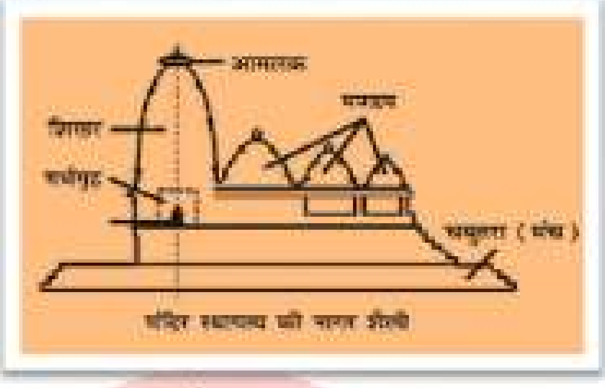

- ➢ उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- ➢ मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- ➢ मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- ➢ पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- ➢ राजस्थान में प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर), दधिमति माता मंदिर (नागौर), औसियां के मंदिर (जोधपुर)।

(2) भूमिज शैली

- ➢ भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- ➢ राजस्थान में प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजोलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चित्तौड़गढ़)

- ➢ भूमिज शैली (Bhumija Style)

  यह भारतीय नागर (North Indian) मंदिर स्थापत्य की एक प्रमुख उप-शैली है, जो विशेष रूप से **मध्य भारत (मालवा, बुंदेलखंड, राजस्थान-गुजरात का कुछ भाग)** में विकसित हुई।

भूमिज शैली की मुख्य विशेषताएँ-

- शिखर ऊँचा और घुमावदार (curvilinear) होता है।
- इसमें अनेक छोटे-छोटे उप-शिखर (miniature spires) एक निश्चित ज्यामितीय क्रम में लगे होते हैं।
- शिखर पर **क्षैतिज व ऊर्ध्वाधर रेखाओं** का जाल (grid pattern) बनता है।
- यह इसे नागर शैली से अलग पहचान देता है।
- मूल आधार
- मंदिर का गर्भगृह प्रायः **चौकोर या तारामय (stellate)** योजना पर आधारित होता है।
- अलंकरण
- दीवारों पर **सूक्ष्म मूर्तिकारी और रेखात्मक सजावट** पाई जाती है।
- अलंकरण अपेक्षाकृत संतुलित और ज्यामितीय होता
- यह शैली विशेष रूप से **मालवा (मध्य प्रदेश)** और उससे जुड़े क्षेत्रों में लोकप्रिय रही।

(3) द्रविड़ शैली

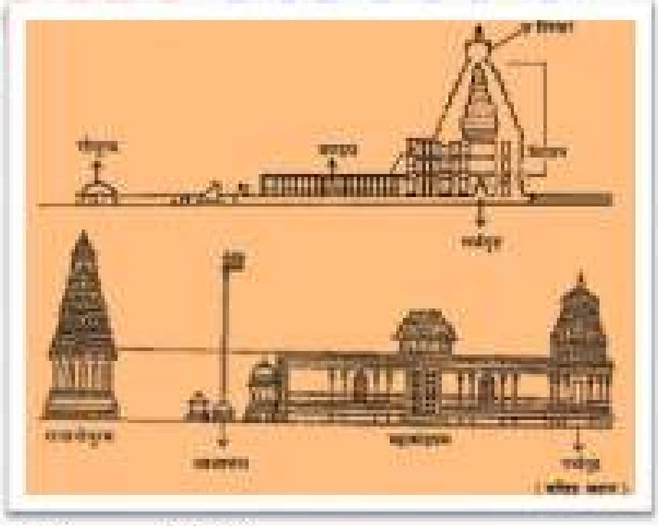

- ➢ दक्षिणी भारत की शैली।
- ➢ इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- ➢ इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- ➢ मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- ➢ द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।
- ➢ राजस्थान में प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़)।

(५)पंचायतन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति,शिव व गणेश के होते है।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते हैं तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ हैं, जिनमे है- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढ़ादीत सूर्य मंदिर (कोटा), अंबाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (जयपुर)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कनसुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारु शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसियां के मंदिर (जोधपुर) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर), कुंभ श्याम मंदिर (चित्तौड़), कालिका माता मंदिर (चित्तौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य)/ महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चियाय माता मंदिर (ओसियां, जोधपुर)

❖ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहो कहते हैं। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

❖ शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारु शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गगण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मन्दिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापित है।

❖ ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)

- यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मन्दिर है।
- इस मन्दिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया है।

- इस मन्दिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे - छोटे मन्दिर बने हुए हैं।
- **NOTE**- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छींछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बाड़मेर में स्थित हैं।

> **ब्रह्मा मन्दिर (छींछ,बाँसवाड़ा)** - इस मन्दिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मन्दिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।
> **ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बाड़मेर)** - इसका निर्माण संत खेतारामजी महाराज ने करवाया।

❖ सावित्री मन्दिर (पुष्कर, अजमेर)

- सावित्री मंदिर का निर्माण रत्नागिरि पर्वत पुष्कर, अजमेर में गोकुलचंद पारीक ने करवाया था।
- सावित्री जी का मेला भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- यहाँ मई, 2016 में राजस्थान का तीसरा रोप वे बनाया गया था।
- कुछ जन अनुश्रुतियों के अनुसार यज्ञ के समय सावित्री माता अपने पति ब्रह्मा से रुठकर यहाँ चली आयी थी। यहीं सावित्री माता ने ब्रह्माजी को श्राप दिया था कि उनकी पूजा पुष्कर के अतिरिक्त कहीं नहीं होगी।

❖ एकलिंगनाथजी के मंदिर (कैलाशपुरी, उदयपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल (कालभोज) ने करवाया।
- राणा मोकल ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था।
- इस मन्दिर में एकलिंगजी की चतुर्मुखी काले पत्थर की मूर्ति है।

- इसमें उत्तर मुख को ब्रह्मा, दक्षिण मुख को शिव, पूर्व मुख को सूर्य, पश्चिम मुख को विष्णु कहा जाता है।
- यह मन्दिर लकुलीश मन्दिर कहलाता है। राजस्थान में पाशुपत सम्प्रदाय (लकुलीश सम्प्रदाय) का यह एकमात्र मन्दिर है।
- एकलिंगजी को मेवाड़ शासक अपना वास्तविक राजा मानते हैं।
- इस मंदिर की तलहटी में महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर है,जिसे लोग ' मीराबाई का मंदिर भी कहते हैं ।

❖ ऋषभदेव मंदिर धूलेव (उदयपुर)

- ऋषभदेवजी (आदिनाथ जी) का मंदिर धूलेव (उदयपुर) में स्थित है।
- वैष्णव धर्म के अनुयायी, ऋषभदेव जी को विष्णु का अवतार मानते हैं।
- आदिवासी लोग ऋषभदेवजी को 'कालाजी ' के नाम से जानते हैं।
- इस मन्दिर में सर्वाधिक केसर का भोग लगाने के कारण इसे केसरियानाथ जी का मंदिर भी कहते हैं।
- यह मंदिर कोयल नदी के तट पर स्थित है तथा 1100 खम्भों पर बना है।
- इस मन्दिर में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा में मूर्ति है।
- यहाँ पर चैत्र कृष्ण अष्टमी को मेला भरता है। यहाँ दिगम्बर, श्वेताम्बर, वैष्णव, शैव मन्दिर हैं।
- भारत का यह एकमात्र ऐसा मंदिर है जिसमें वैष्णव तथा मुस्लिम समान रूप से पूजा करते हैं।
- कोर्ट के आदेशानुसार मंदिर की पूजा जैन करते हैं इस कारण यह मन्दिर जैनों व भील जनजाति के मध्य विवादित बना हुआ है।

❖ जगत अम्बिका मन्दिर (उदयपुर)

- इस मन्दिर का निर्माण गुहिल वंशीय राजा अल्लट ने लगभग 925 ई. में करवाया।
- इस मन्दिर में दुर्गा के प्रमुख रूपों में एक रूप महिषासुरमर्दिनी रूप सर्वप्रमुख है।
- इस मन्दिर में नृत्य करते हुए गणपति की विशाल प्रतिमा स्थित है।

राजस्थान की मस्जिदें, दरगाह एवं मकबरे

❖ ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर)

- ➢ शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की मुख्य मजार का निर्माण 1537 ई. में मांडू के सुल्तान ग्यासुद्दीन खिलजी ने करवाया था।
- ➢ इतिहासकार हरविलास शारदा के अनुसार ख्वाजा साहब की पक्की मजार 1464 ई. में बनवायी गयी जब अजमेर मालवा के सुल्तान मोहम्मद खिलजी के अधिकार में था।
- ➢ दरगाह में 75 फीट ऊँचा बुलन्द दरवाजा है।
- ➢ यहाँ अकबरी मस्जिद स्थित है।
- ➢ यहाँ दो बड़ी देग रखी हैं इनमें बड़ी देग बादशाह अकबर द्वारा (1567 ई.) और छोटी देग बादशाह जहाँगीर (1613 ई.) द्वारा भेंट की गई।
- ➢ दरगाह का मुख्य प्रवेश द्वार निजाम द्वार है जिसका निर्माण हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली के द्वारा करवाया गया था।
- ➢ इसके ऊपर जो दो नगाड़े रखे हुए हैं उन्हें मुगल सम्राट अकबर ने भेंट किए थे।
- ➢ महफिल खाना का निर्माण बशीरुद्दौला द्वारा 1888 ई. में करवाया गया था। यहाँ उर्स के मौके पर कव्वाली गाई जाती है।
- ➢ अजमेर यहाँ बेगमी दालान है जिसका निर्माण बादशाह शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा द्वारा करवाया गया।
- ➢ मुख्य मजार के चारों ओर चाँदी का कटहरा सवाई जयसिंह ने बनवाया।
- ➢ यहाँ पर अनेक लोगों की कब्रगाह है जिनमें ख्वाजा साहब की पुत्री बीबी हाफिज जमाल, ख्वाजा मुइनुद्दीन के दो पोते, माण्डू के सुल्तान तथा भिश्ती निजामुद्दीन सिक्का की कब्रे मौजूद हैं।

❖ हजरत शकर पीर बाबा की दरगाह (नरहड़, झुंझुनू)

- ➢ यह राजस्थान की सबसे बड़ी दरगाह है।
- ➢ इन्हें बांगड़ के धणी, नरहड़ के पीर कहते हैं।
- ➢ प्रतिवर्ष जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) को उर्स भरता है।

- ➢ मानसिक विकलांग लोगों के मिट्टी रगड़ने से आराम मिलता है।
- ➢ यह दरगाह सांप्रदायिक सौहार्द्र का अनूठा उदाहरण है।
- ➢ फतेहपुर सीकरी के सलीम चिश्ती शक्कर पीर बाबा के ही शिष्य थे।
- ➢ इस में तीन प्रवेश द्वार हैं- (1) बुलंद दरवाजा (2) बसंती दरवाजा (3) बगली दरवाजा

❖ शेख हमीमुद्दीन नागौरी की दरगाह (नागौर)

- ➢ इन्हें सुल्तान - ए - तारकीन कहा जाता है।
- ➢ सुल्तान - ए - तारकीन साहब की दरगाह नागौर में गिनाणी तालाब के पास स्थित है।
- ➢ ये ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।
- ➢ 1274 ई. में नागौर में इंतकाल हो गया।
- ➢ यहाँ अजमेर के बाद दूसरा सबसे बड़ा उर्स भरता है।

❖ सैय्यद फखरुद्दीन की दरगाह (गलियाकोट, डूंगरपुर)

- ➢ इसे मजार-ए-फखरी भी कहा जाता है।
- ➢ यह दरगाह माही नदी के किनारे स्थित है।
- ➢ यह दाऊदी बोहरा संप्रदाय का प्रमुख तीर्थ स्थल है।

- शत्रुशाल (छत्रशाल) ने 'रंगमहल' का निर्माण करवाया जो सुंदर भित्ति चित्रों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- उम्मेद सिंह ने 'चित्रशाला' बनवाई। चित्रशाला को भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहते हैं।
- महाराव विष्णुसिंह के समय इस चित्रशैली पर यूरोपियन प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हुआ।
- इसे पशु - पक्षियों वाली चित्रशैली कहते हैं।
- इस चित्रशैली में सोने, चाँदी के रंगों का अधिक प्रयोग हुआ है।
- इस चित्रशैली में मेवाड़, मुगल व मालवा शैली का मिश्रण है।
- वर्षा में नाचते मोर, पेड़ पर फुदकते बंदर, कबूतर, हाथी, हरिण, बतख, खजूर के वृक्ष, कमल के फूल अंगुलियों में मेहंदी लगी, पेड़ों की कतार, झुकी पगड़ी, शिकार, ऋतुएँ, उत्सव, भोग विलास, अन्त पुर का जीवन, चक्रदार पायजामा, आम्रपत्र के समान आँखें, बारहमासा, कृष्णलीला दरबार, शिकार, हाथियों की लड़ाई, हरे व नारंगी रंगों का प्रयोग इस चित्रशैली की मुख्य विशेषता है।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकारों में सुरजन, अहमद, डालू, श्रीकिशन, श्रीकृष्ण व रामलाल प्रमुख हैं।

❖ दुगारी उपशैली

- नैनवा (बूंदी) के पास स्थित सीताराम मंदिर की चित्रशाला में चित्रांकित शैली।
- चित्रों में स्वर्णकलम का प्रयोग, भगवान राम केन्द्रित चित्र प्रधानता।
- वनस्पति रंग की प्रधानता वाली शैली।
- प्रमुख चित्र मत्स्यावतार व कच्छपावतार।
- एकमात्र चित्रशैली जिसमें चित्रकार स्वयं ही चित्र के नीचे शीर्षक लिखता है जैसे-'राम जी झूलों झूले है'। यह अपनी जीवंत रंग-योजना, खासकर हरे, नीले और सुनहरे रंगों, तथा 'गणिकाओं के चित्र' (Alwar) और 'भित्तिचित्रों' (बूंदी की चित्रशाला) के लिए प्रसिद्ध है, जो मुख्य रूप से प्राकृतिक रंगों से चित्रित होते थे और लोक-जीवन व दरबारी दृश्यों को दर्शाते थे।

❖ हस्तशिल्प

- राजस्थान की हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध है इसलिए राजस्थान को हस्तकलाओं का अजायबघर / खजाना कहा जाता है।
- हस्तकला उद्योग केन्द्र बोरानाडा, जोधपुर में है।
- हस्तकलाओं का तीर्थ जयपुर को कहते हैं।
- राजस्थान में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक संरक्षण देने वाला संस्थान राजसीको है जिसकी स्थापना 3 जून, 1961 को जयपुर में की गई थी। राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं को राजस्थान लघु उद्योग निगम राजस्थली नाम से विपणन करता है।
- वर्ष 1998 की औद्योगिक नीति में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक संरक्षण दिया गया है।

❖ पॉटरी

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर की जाने वाली आकर्षक चित्रकारी पॉटरी कहलाती है।
- पॉटरी का उद्भव दमिश्क (सीरिया की राजधानी) में माना जाता है जो फारस, अफगानिस्तान होती हुई भारत आयी।

❖ ब्लू पॉटरी

- चीनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- सामग्री: इसका 'आटा' या मिश्रण **क्वार्ट्ज पत्थर पाउडर, पिसा हुआ कांच, मुल्तानी मिट्टी, बोरैक्स, गोंद और पानी** को मिलाकर तैयार किया जाता है।
- इसके लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को है।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुनर्जीवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पद्म श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्लू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई है।
- जयपुर ब्लू पॉटरी को वर्ष 2009 में भौगोलिक संकेत (Geographical Indication - GI) टैग प्राप्त हुआ।

❖ ब्लैक पॉटरी

❖ ब्लैक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध है। **कागजी पॉटरी**

- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।

❖ **मोलेला पॉटरी**

➤ मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है । यह मुख्य रूप से टेराकोटा (Terracotta) कला है, जिसमें मिट्टी के उभरे हुए (Relief) भित्ति चित्र और फलक (Plates) बनाए जाते हैं।

❖ **बीकानेरी पॉटरी (सुनहरी पॉटरी)**

➤ इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता है । यहाँ की पॉटरी में मिट्टी के ऊपर 'कूपि तकनीक (ऊंट की खाल के रेशों का उपयोग) या सीधे सतह पर उभारदार (Embossed) काम किया जाता है।

❖ **मुनव्वती / उस्ता कला**

➤ इस कला में ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी की जाती है।

- यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है। यह कला मुगल काल में ईरान (फारस) से भारत आई थी।
- बीकानेर के महाराजा राम सिंह इस कला के कलाकारों को लाहौर से बीकानेर लाए थे।

➤ हीसामुद्दीन उस्ता कला के प्रमुख चित्रकार हैं, जिन्हें इस कला के लिए वर्ष 1986 में पद्मश्री दिया गया था। मुहम्मद हनीफ उस्ता, कादर बक्श इसके कारीगर हैं ।

➤ उस्ताकला को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना 15 अगस्त, 1975 को की गई थी जिसके प्रथम निदेशक हीसामुद्दीन उस्ता को बनाया गया था।

➤ इलाही बक्श ने ऊँट की खाल पर बीकानेर शासक महाराजा गंगासिंह का चित्र बनाया ।

➤ इस कला का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा 'मुनव्वत' है, जिसमें सोने की बारीक परतों से उभारदार (Embossed) डिजाइन बनाए जाते हैं।

❖ **मर्थरणा कला**

❖ इस कला में कपड़े पर सुनहरी नक्काशी की जाती है। यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है। इस कला में ईसर, गणगौर, देवी - देवताओं की भित्ति चित्र बनाये जाते हैं । मुन्नालाल, चन्दूलाल मर्थरणा कला के प्रमुख कारीगर थे **भित्ति चित्र (Fresco):** हवेलियों और मंदिरों की दीवारों पर चूने के गारे का उपयोग करके गीली सतह पर चित्रकारी की जाती है।

❖ **मीनाकारी**

➤ विभिन्न रंगों की मूल्यवान रत्नों पर मीनें की सहायता से तथा सोने - चाँदी के आभूषणों पर चित्रकारी या रंग भरने की कला को मीनाकारी कहते हैं।

➤ मीनाकारी कला का उद्भव पर्शिया (ईरान) में माना जाता है।

➤ इसे चॉसरों के समय फारस में लाया गया और फारस से मुगलों द्वारा लाहौर में लायी गई जहाँ पर सिक्खों द्वारा यह कार्य किया जाता है।

➤ लाहौर से महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा आमेर में लाया गया।

➤ जिसमें मुख्य मीनाकार हरिसिंह, अमरसिंह, किशनसिंह, गोभासिंह, रैभानसिंह थे।

➤ **राज्य में निम्न मीनाकारी प्रसिद्ध है-**

(i) चाँदी पर मीनाकारी- नाथद्वारा, राजसमंद
(ii) पीतल पर मीनाकार जयपुर
(iii) तांबे पर मीनाकारी- भीलवाड़ा
(iv) सोने पर मीनाकारी- प्रतापगढ़

➤ जयपुर विशेष रूप से सोने पर 'लाल रंग' की मीनाकारी के लिए प्रसिद्ध है।

➤ जिसमें मुख्य रूप से कुदरतसिंह तथा मुन्ना लाल (गुरुचरण सिंह) विख्यात हैं।

➤ सरदार कुदरत सिंह को 1988 में इस काल के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

❖ **थेवा कला**

- रामलीला का प्रारम्भ गोस्वामी तुलसीदास ने उत्तरप्रदेश से किया था।
- राजस्थान में अलग - अलग क्षेत्र की अलग - अलग रामलीलाएँ प्रसिद्ध हैं, जैसे-

(i) बिसाऊ (झुंझुनूं) में रामलीला का मूक अभिनय किया जाता है जिसका प्रारम्भ जमनादेवीमाता नामक संन्यासिनी ने किया था।

(ii) अटरू (बारां) की रामलीला में शिव धनुष भगवान राम द्वारा नहीं बल्कि दर्शकों द्वारा (कुंवारे लड़कों द्वारा) तोड़ा जाता है।

(iii) मांगरोल (बारां) की रामलीला ढाई कड़ी के दोहों की है।

❖ **रासधारी**

- इसमें भगवान कृष्ण की लीलाएँ होती हैं।
- इस कला के जनक मेवाड़ के मोतीलाल जाट थे।
- मोरध्वज नागजी, हरिशचन्द्र प्रमुख कलाकार हैं।

❖ **चारबैत**

- इस लोकनाट्य का प्रारम्भ टोंक के नवाब फैजुल्ला खां के समय अब्दुल करीम खां एवं खलीफा करीम खां निहाग ने प्रारम्भ किया।
- यह पठानी मूल का प्रसिद्ध लोकनाट्य है।
- चारबैत नाट्य चार श्रेणियों में विभक्त है- भक्ति, शृंगार, रकीबखानी और गम्माज।
- नवाब शहादत अली खां रामपुर से चारबैत कलाकारों को टोंक लाये थे।
- चारबैत लोकनाट्य का मुख्य वाद्य यंत्र ढपली होता है।

अध्याय - 4

भाषा एवं साहित्य

राजस्थानी भाषा की बोलियाँ

❖ **राजस्थानी भाषा**

- ' राजस्थान के लिए एक लोक कहावत प्रसिद्ध है कि- "पाँच कोस पर पानी बदले, सात कोस पर वाणी।"
- राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल 22 भाषाओं में शामिल नहीं क्या गया है। इस सम्बन्ध में सलाह देने हेतु केन्द्र सरकार ने हाल ही में एक समिति का गठन भी किया है।
- राजस्थानी भाषा राजस्थान मध्य भारत के पश्चिमी भाग, सिन्ध, पंजाब, हरियाणा के राजस्थान के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।
- 21 फरवरी को राजस्थानी भाषा दिवस तथा 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- वर्तमान में राजस्थानी भाषा बोलने वालों की संख्या 11-12 करोड़ से अधिक है।
- राजस्थानी भाषा का वक्ताओं की दृष्टि से भारत में 7वाँ स्थान तथा विश्व में 16वाँ स्थान है।
- राजस्थान की राजभाषा हिन्दी है परन्तु यहाँ की मातृभाषा राजस्थानी है।
- भाषा विज्ञान के अनुसार राजस्थानी भाषा भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत आती है।
- राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण सन् 1912 ई. में सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक **"लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" (विषयक विश्व कोष)** में किया तथा सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द दिया।
- सन् 1914 से सन् 1918 के बीच इटली के विद्वान एल. पी. टैस्सी टोरी ने **"इण्डियन ऐन्टीक्वेरी"** नामक पत्रिका में राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति और विकास पर प्रकाश डाला।
- राजस्थानी भाषा ' मुड़िया ' लिपि में लिखी जाती है।
- बिना मात्रा वाले महाजनी शब्द मोड़ कर लिखे
- जाते हैं जिन्हें मुड़िया अक्षर कहते हैं।
- मुड़िया अक्षर के आविष्कारक राजा टोडरमल थे।
- प्राचीन समय में राजस्थान की भाषा को ' मरु ' भाषा के नाम से जाना जाता था।
- जैन कवियों ने अपने ग्रन्थों की भाषा को मरु भाषा कहा है।
- मरु भाषा का सर्वप्रथम उल्लेख वि.सं. 835 में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित ' **कुवलयमाला** ' में वर्णित 18 देशी भाषाओं में किया गया जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा थी।
- कवि कुशललाभ के ग्रन्थ **"पिंगल शिरोमणि"** तथा अबुल फजल के **"आईने अकबरी"** में **"मारवाड़ी शब्द"** का प्रयोग किया गया है
- 17वीं शताब्दी की ' नोबोली छंद ' तथा 18वीं शताब्दी की ' आठ देशरी गुजरी ' नामक रचनाओं में भी मरु भाषा का उल्लेख हुआ है।

- राजस्थान की कुल बोलियों की संख्या 73 है ।
- राजस्थान के सबसे अधिक क्षेत्रफल में बोली जाने वाली भाषा मारवाड़ी है ।
- राजस्थान में जनसंख्या के आधार पर सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा ढूंढाड़ी है ।

❖ **राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति, उत्पत्ति काल व स्वतंत्रकाल**

➢ **उत्पत्ति**

- डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी व महावीर प्रसाद शर्मा राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति **शौरसेनी अपभ्रंश** से मानते हैं ।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **नागर अपभ्रंश** से मानते हैं ।
- के. एम. मुंशी एवं मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति **गुर्जर अपभ्रंश** से मानते है।
- सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति सौराष्ट्री अपभ्रंश से हुआ।
- गुर्जरी अपभ्रंश से ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं भाषा वैज्ञानिकी के आधार पर राजस्थानी भाषा की उत्पति मानी जाती हैं ।
- राजस्थानी भाषा के दो साहित्यिक रूप हैं-

1. डिंगल
2. पिंगल

डिंगल	पिंगल
▪ यह पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है। ▪ इसका विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ। ▪ इसका अधिकांश साहित्य चारण कवियों द्वारा लिखा गया। ▪ यह मारवाड़ी मिश्रित राजस्थानी है। ▪ यह शैली गीत के रूप में है। ▪ डिंगल की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जो शब्द जिस तरह बोला जाता है, ठीक उसी तरह लिखा जाता है। ▪ इसके ग्रंथ- राजरूपक, वचनिका राठौड़, रतनसिंह, महेसदासौत री, अचलदास खींची री वचनिका, राव जैतसी रो छंद, रुक्मणि हरण, नागदमण, सगतसिंह रासो, ढोलामारू रा दूहा । ▪ डिंगल शैली के चार उपशैलियाँ है- (i)चारण शैली (ii)जैन शैली (iii) संत शैली (iv)लौकिक शैली ▪ डिंगल शैली का सर्वप्रथम प्रयोग कुशललाभ द्वारा रचित ' पिंगल - शिरोमणी (वि.सं. - 1607-08) ' नामक ग्रंथ में किया गया। ▪ 1871 में जोधपुर के कविराज बांकीदास की 'कुकवि बत्तीसी ' नामक रचना में डिंगल शब्द का प्रयोग प्रथम बार किया गया । ▪ रामकरण आसोपा ने डिंगल का शब्दकोष तैयार किया । राजस्थानी भाषा का पहला व्याकरण रामकरण आसोपा के द्वारा लिखा गया।	▪ पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप है। ▪ इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। ▪ इसका अधिकांश साहित्य भाट कवियों द्वारा लिखा गया। ▪ यह ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। ▪ यह शैली छंद एवं पदों (काव्य) में है। ▪ इसके ग्रंथ- पृथ्वीराज रासो, रतन रासो, विजयपाल रासो, वंश भास्कर, खुमाण रासो, राज विलास, पांडव यशेन्दु चन्द्रिका, हम्मीर रासो व अवतार चरित्र ।

➢ **उत्पत्ति काल**

- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति मोटे तौर पर विद्वानों ने 12वीं सदी के अंतिम चरण में माना है।
- क्योंकि ' भरतेश्वर बाहुबली घोर ' तथा ' भरतेश्वर बाहुबली घोष ' जैन रचनाएं इसी समय की लिखी हुई हैं ।
- डॉ . एल . पी . टेस्सीटोरी के अनुसार राजस्थानी भाषा 12वीं सदी में अस्तित्व में आ चुकी थी ।

- **साहित्यिक काल विभाजन:**
- **प्राचीन काल (11वीं-15वीं शताब्दी):** जैन साहित्य और वीरगाथाओं का काल (उदा. 'पृथ्वीराज रासो')।
- **मध्य काल (16वीं-19वीं शताब्दी):** भक्ति और श्रृंगार रस का स्वर्ण युग (उदा. 'मीराबाई के पद', 'वेलि क्रिसन रुक्मणी री')।
- **आधुनिक काल (19वीं शताब्दी से अब तक):** सूर्यमल्ल मीसण को आधुनिक राजस्थानी साहित्य का जनक माना जाता है (प्रमुख रचना: 'वंश भास्कर')।

- बाबा झुंझारजी का स्थान सामान्यतः खेजड़ी के पेड़ के नीचे होता है।

➢ **वीर बिग्गाजी**
- जन्म – जांगल प्रदेश । रीड़ीगाँव (बीकानेर)
- पिता – राव मोहन, माता – सुल्तानी देवी।
- बीकानेर के जाखड़ समाज के कुल देवता।
- मुस्लिम लुटेरों से गायों की रक्षा की।

➢ **डूंगजी-जवाहरजी (गरीबों के देवता, राजस्थान के रोबिन हुड)**
- सीकर (पाटोदा) जिले के लुटेरे लोकदेवता, जो धनवानों व अमीरों से धन लूटकर गरीबों में बांट देते थे।
- 1857 की क्रांति में सक्रिय भाग लिया।
- नसीराबाद छावनी को लूटा

➢ **हरिराम बाबा**
- ये सर्प दंश का इलाज करते थे।
- सुजानगढ़ नागौर मार्ग पर झोरड़ा गाँव (नागौर) में इनका पूजा स्थल है।
- गुरु – भूरा
- पिता – रामनारायण
- माता – चन्दनी देवी
- साँप के बाम्बी की पूजा होती है

➢ **पनराजजी**
- जन्म – नगा गाँव (जैसलमेर)।
- मुस्लिम लुटेरों से काठोड़ी गाँव के ब्राह्मणों की गायों को छुड़ाते हुए शहीद हुए।
- इनकी स्मृति में पनराजसर गाँव (जैसलमेर) में वर्ष में दो बार मेला भरता है।

➢ **केसरिया कुँवरजी**
- गोगाजी के पुत्र जो लोकदेवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- इनके थान पर सफेद रंग की ध्वजा फहराते हैं।

➢ **भोमियाजी**
- गाँव-गाँव में भूमि रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते हैं ।

अध्याय – 6

राजस्थान में सामाजिक जीवन
मेले एवं त्यौहार

राजस्थान के प्रमुख मेले –

अजमेर के मेले
- **पुष्कर मेला** – यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। ख्वाजा साहब का उर्स – यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की 1 से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में ।
- **कल्पवृक्ष मेला** – यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** – यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

अलवर के मेले
- **चंद्र प्रभु मेला** – यह मेला तिजारा, अलवर में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** – यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।
- **हनुमानजी का मेला** – यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।
- **भृर्तहरि मेला** – यह मेला भृर्तहरि (महान योगी भृर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है ।
- **बिलारी माता मेला** – बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले
- **रणछोड़राय का मेला** – यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, वैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** – यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** – यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **बजरंग पशु मेला** – यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।

बालोतरा के मेले
- **मल्लीनाथ पशु मेला** – यह मेला बालोतरा जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला** – यह मेला बालोतरा जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्णा दशमी को भरता है।

<u>बीकानेर जिले के मेले</u>

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चेरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

<u>बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले</u>

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।
- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।
- **अंदेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **गोपेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)** - यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।

<u>चूरू जिले के मेले</u>

- **भभूता सिद्ध का मेला** - यह मेला चूरू जिले के चंगोई (तारानगर) में भाद्रपद सुदी सप्तमी को भरता है।
- **गोगा जी का मेला** - यह मेला चूरू जिले के ददरेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।
- **सालासर बालाजी का मेला** - यह मेला चूरू जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

<u>बारां जिले के मेले</u>

- **सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)** - यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।
- **डोल मेला** - यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।
- **ब्रह्माणी माता का मेला** - यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।
- **फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)** - यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।
- **कपिल धारा का मेला** - यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

<u>डीग के मेले</u>

- **गंगा दशहरा मेला** - यह मेला डीग जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वादशी तक भरता है।
- **बृज महोत्सव** - यह मेला द्वादेशी से माघ शुक्ल - डीग जिले में भरता है ।

<u>भरतपुर के मेले</u>

- **बसंती पशु मेला** - यह मेला माघ अमावस्या से शुक्ल पंचमी तक भरता है ।
- **गरुड़ मेला** - यह मेला भरतपुर जिले के बंसी पहाड़पुर में कार्तिक शुक्ल तृतीया को भरता है।
- **भोजन थाली/भोजन थाली परिक्रमा** - भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को कामा में भरता है ।
- **जसवंत पशु मेला** - यह मेला भरतपुर जिले में आश्विन शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक भरता है।

<u>कोटपूतली-बहरोड़ के मेले</u>

- **बाणगंगा मेला** - यह विराटनगर, कोटपूतली-बहरोड़ में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।

<u>जयपुर के मेले</u>

- **गणगौर मेला** - गणगौर मेला जयपुर में चैत्र शुक्ला तीज व चौथ को भरता है।
- **शीतलामाता का मेला** - यह मेला चाकसू, जयपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी को भरता है।
- **गधों का मेला** - आश्विन कृष्ण सप्तमी से आश्विन कृष्ण एकादशी तक लुनियावास (सांगानेर) गांव में भरता है।
- **तीज की सवारी एवं मेला** - यह जयपुर में श्रावण शुक्ला तृतीया को आयोजित होता है।

<u>शाहपुरा के मेले</u>

- **फूलडोल का मेला (रामस्नेही सम्प्रदाय)** - यह मेला शाहपुरा जिले के रामनिवास धाम (रामद्वारा) में चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक भरता है।

<u>भीलवाड़ा के मेले</u>

- **सवाई भोज का मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद में सवाई भोज स्थान पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को भरता है।
- **तिलस्वां महादेव मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के तिलस्वां (मांडलगढ़) में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के अवसर पर भरता है।
- **जोगणियां (त्रिवेणी) का मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के त्रिवेणी संगम जोगणियां (बेगूं, मांडलगढ़) में शिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होता है।

❖ वेशभूषा एवं आभूषण

❖ राजस्थान में पुरुष वस्त्र (वेशभूषा)

➤ **पगड़ी**

- इसको पाग, पेचा, फालियो, साफा, घुमालो, फेंटो, सेलो, अमलो, लपेटो, बागा, शिरोत्राण, फेंटा आदि नामो से भी जाना जाता है।
- यह सिर पर लपेटे जाना वाला लगभग 5.5 मीटर लम्बी एवं 40 सेमी. चौड़ी होती है।
- उदयपुर की पगड़ी तथा जोधपुर का साफा प्रसिद्ध है।
- युद्ध भूमि में केसरिया पगड़ी, दशहरे पर काले रंग की मंदील पगड़ी, होली पर फूल-पत्तियों वाली पगड़ी, विवाह पर पंचरंगी पगड़ी, श्रावण में लहरिया पगड़ी पहनी जाती है।
- रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन भाई को मोठड़ा साफा देती है।
- मीणा एवं गुर्जर जाति की पगड़ी को फेंटा कहते है।

➤ **धोती**

- पुरुष द्वारा कमर से घुटने तक पहना जाने वाला वस्त्र है।
- आदिवासियों/भीलों द्वारा पहनी जाने वाली धोती ढेपाड़ा/डेपाड़ा कहलाती है।
- सहरिया जनजाति के लोग धोती को पंछा कहते है।

➤ **अंगरखी/बुगतरी**

- पूरी बाहों का बिना कॉलर एवं बटन वाला कुर्ता जिसे बांधने के लिए कसे (डसे) होती है।
- यह प्रायः सफेद रंग का होता है जिस पर कढ़ाई की होती है।

➤ **पोतिया**

- भील पुरुषों द्वारा पगड़ी के स्थान पर बांधा जाने वाला वस्त्र पोतिया कहलाता है।

➤ **शेरवानी**

- शादियों में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जो घुटने से लम्बा एवं कोटनुमा होता है।

➤ **पायजामा**

- अंगरखी, चुगा और जामें के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता है।

➤ **चुगा**

- इसे चोगा भी कहते है। यह अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।

➤ **आतमसुख**

- तेज सर्दी से बचने के लिए शरीर पर ऊपर से नीचे तक पहने जाने वाला वस्त्र।

➤ **बिरजस (ब्रिजेस)**

- यह पायजामे के स्थान पर पहना जाने वाला चुड़ीदार वस्त्र होता है।

➤ **कमरबंध**

- इसे पटका भी कहते है।
- यह जामा के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र होता है, जिसे तलवार या कटार को फंसाया जाता है ।

➤ **पछेवड़ा**

- तेज सर्दी में ठण्ड से बचाव के लिए पुरुषों द्वारा कम्बल की तरह ओढ़े जाने वाला मोटा सूती वस्त्र पछेवड़ा कहलाता है।

➤ **अंगोछा**

- धूप से बचने के लिए पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र अंगोछा कहलाता है।

❖ राजस्थान में महिलाओं (स्त्रियों) के वस्त्र/वेशभूषा

➤ **कुर्ती और कांचली**

- स्त्रियों द्वारा शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पहनी जाती है।
- कांचली के ऊपर कुर्ती पहनी जाती है, जिसमें कांचली के बांहे होती है जबकि कुर्ती के बांहे नहीं होती है।

➤ **घाघरा**

- इसे लहंगा, पेटीकोट, घाबला आदि नामो से भी जाना जाता है।
- यह कमर से नीचे एड़ी तक पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र होता है, जो कलियों को जोड़कर बनाया जाता है।
- आदिवासियों के घाघरे को कछाबू कहते है।
- आदिवासियों के नीले रंग के घाघरे को नांदना कहते है।

➤ **ओढ़नी (लुंगड़ी)**

- महिलाओं द्वारा यह सिर पर ओढ़ी जाती है।
- लहरिया, पोमचा, धनक, चुंदरी, मोठड़ा आदि लोकप्रिय ओढ़नियां है।
- डूंगरशाही ओढ़नी जोधपुर की प्रसिद्ध है।
- ताराभांत की ओढ़नी आदिवासी महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाती है।

➤ **लहरिया**

- यह श्रावण मास की तीज को पहने जाने वाली अनेक रंगों की ओढ़नी है।
- समुंद्री लहर नामक लहरिया जयपुर में रंगा जाता है।

➤ **मोठड़ा**

- जब लहरिया की धारियां एक-दूसरे को काटती हुई बनाई जाती है, तो वह मोठड़ा कहलाती है।
- मोठड़ा जोधपुर की प्रसिद्ध है।

➤ **सलवार**

- कमर से लेकर पांवों में पहना जाने वाला वस्त्र सलवार कहलाता है ।

➤ **कुर्ता**

- यह शरीर के ऊपरी हिस्से पर पायजामा के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।

➤ **कटकी**

- अविवाहित व आदिवासी युवतियां द्वारा ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी कटकी कहलाती है।